NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : **M.A Psychology, Part-I**

Paper : **Paper-I**

Prepared by : **Dr. (Prof.) Prabha Shukla**
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : **मनोविज्ञान का स्वरूप और दृष्टिकोण**
(Nature and Perspectives of Psychology)

मनोविज्ञान का स्वरूप और दृष्टिकोण

(Nature and Perspectives of Psychology)

1.1 परिचय (Introduction)

प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय को भली–भांति समझाने का प्रयास किया जाएगा। इस क्रम में सबसे पहले मनोविज्ञान के स्वरूप को समझाने का प्रयास किया जाएगा। मनोविज्ञान क्या है, इसका उद्‌भव कैसे हुआ तथा इसको किस प्रकार परिभाषित किया गया है– इसकी विस्तृत चर्चा की जाएगी।

मनोविज्ञान के स्वरूप को भली–भांति स्पष्ट करने के बाद मनोविज्ञान के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के विभिन्न विचारों का वर्णन किया जाएगा। इस प्रयास के अन्तर्गत जैविक संदर्भ (biological perspective), मनोवैश्लेषिक संदर्भ, (Psychoanalytic perspective), व्यवहारपरक संदर्भ (behavioural perspective), संज्ञानात्मक संदर्भ (humanistic perspective), तथा सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ (Sociocultural perspective) की विस्तार पूर्वक व्याख्या की जाएगी।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय, स्वरूप और इसके विभिन्न विचार धाराओं के संबंध में जानकारी देने का एक सफल प्रयास सिद्ध होगा। इसे पढ़कर पाठकों को मनोविज्ञान के रूप–रेखा की भली–भांति जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

1.2 मनोविज्ञान का स्वरूप (Nature of Psychology)

मनोविज्ञान चूंकि व्यवहार का विज्ञान है इसलिए यह अन्य व्यावहारिक और सामाजिक विज्ञानों से संबंधित है। व्यक्ति के ज्ञान–विज्ञान की समस्त शाखाएं एक–दूसरे से संबंधित हैं। मनोविज्ञान एक विज्ञान है। विज्ञान की सारी शाखाएं एक–दूसरे से किसी–न–किसी रूप में संबंधित है। हर विषय की कुछ सामान्य मान्यताएं, सिद्धांत, सामान्य समस्याएं हैं जो एक–दूसरे को समान बनाती है। वहीं हर विषय की अपनी विशेषताएं, विषय विस्तार तथा प्रकृति असमान है। इसमें किन्हीं विषयों में समानता मिलेगी तथा किन्हीं में असमानता, फिर मनोविज्ञान की विषयवस्तु व्यवहार है। अतः जहां–जहां व्यक्ति का संबंध है वे सभी विषय किसी न किसी तरह मनोविज्ञान से संबंधित हैं। मनोविज्ञान से संबंधित विज्ञानों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

सर्वप्रथम प्राकृतिक विज्ञान जिनमें भौतिक, जीव, रसायन एवं शरीर विज्ञान सम्मिलित किये गये। तत्पश्चात् व्यावहारिक विज्ञान के अन्तर्गत समाजशास्त्र, मानवशास्त्र वह अर्थशास्त्र एवं नियामक विज्ञान के अन्तर्गत तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र व सौन्दर्यशास्त्र हैं।

मनोविज्ञान एवं प्राकृतिक विज्ञान (Psychology and Natural Science)

प्राकृतिक विज्ञानों के अन्तर्गत भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र और जीव विज्ञान विषय आते हैं।

भौतिकशास्त्र में भौतिक पदार्थों का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान उद्दीपकों (Stimuli) तथा प्रतिक्रियाओं (Responses) के मध्य पाये जाने वाले संबंधों का अध्ययन करते हैं। मनोभौतिकी (Psychophysics) के प्रत्यय (Concept) के अन्तर्गत न केवल सांवेगिक परिणामों (Sensory Magniture) का मापन होता है वरन् प्रत्यक्षीकरण, भाव, स्थान आदि मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। वास्तवित रूप में मनौभौतिकी मनोविज्ञान की एक शाखा भी है जो आत्मगत मापनों से संबंधित है। जेम्स ड्रेवर (James Drever) ने मनोभौतिकी को इन शब्दों में परिभाषित किया है। ''मनोभौतिकी प्रयोगात्मक संबंधों की खोज करती है''(Psychophysics is that branch of experimental psychology which investigates the functional and quantitative relations between physical stimuli and sensory events). इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक स्थिति भिन्न-भिन्न होती है। भिन्न-भिन्न व्यक्ति संवेदनाओं का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-भिन्न करते हैं। इस तरह मनोविज्ञान के विषय आत्मगत हैं व भौतिक पदार्थों का अध्ययन सम्मिलित कर मात्रात्मक मापन संभव है। अत: हम कह सकते हैं कि भौतिकशास्त्र व मनोविज्ञान के सिद्धांत मानसिक व्यवस्था से प्रभावित होकर आत्मगत हैं तो भौतिकशास्त्र में विषय वस्तुगत। मनोभौतिकी (Pshcho-Physics) इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जैसा कि मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार शब्द में बाह्य क्रियाओं के साथ आंतरिक क्रियाओं का भी अध्ययन किया जाता है। जीवशास्त्र (Biology) जीवित प्राणियों की क्रियाओं का अध्ययन करता है व मनुष्य की उत्पति और जैविक विकास का अध्ययन करता है। जीवशास्त्र मानव को एक जीव मानकर उसका अध्ययन करता है जबकि मनोविज्ञान एक व्यक्ति के रूप में अध्ययन करता है अत: दोनों ही विज्ञान जीव का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार दोनों परस्पर संबंधित हैं।

जैसा कि रासायनिक क्रियाओं का अध्ययन रसायनशास्त्र का विषय है। प्राणी व्यवहार का आधार जैव-रासायनिक (Bio-Chemical) माना जाता है। ये जैव-रासायनिक क्रियाएं मानव के संपूर्ण व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार व्यवहार को समझने के लिए रासायनिक क्रियाओं का ज्ञान,

कारण व प्रभाव (Cause Effect) संबंध को समझा जा सकता है। अत: यह अतिश्योक्ति न होगी कि रसायन शास्त्र व मनोविज्ञान एक-दूसरे से संबंधित हैं।

शरीरशास्त्र (Physiology) शारीरिक क्रियाओं और शारीरिक संरचन का अध्ययन करता है। शरीरशास्त्र में नाड़ी संस्थान, ज्ञानेन्द्रियां, स्नायुमंडल, मांसपेशियां, रक्त-प्रवाह, श्वास आदि का अध्ययन किया जाता है। शारीरिक मनोविज्ञान जो मनोविज्ञान की ही शाखा है मानसिक क्रियाओं से संबंधित शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। अत: शारीरिक और मानसिक क्रियाओं से संबंधित शारीरिक मनोविज्ञान जो मनोविज्ञान की ही शाखा है मानसिक क्रियाओं से संबंधिात क्रियाओं का अध्ययन करता है। अत: शारीरिक और मानसिक क्रियाओं से संबंधा विशेष के कारण मनोविज्ञान में शारीरिक क्रियाओं का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए एक पृथक शाखा ही बन गई, जो शारीरिक मनोविज्ञान (Psysiological Psychology) कहलाई।

उसने न केवल प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को जन्म दिया, बल्कि नवीन मनोविज्ञान को भी मनोविज्ञान से पृथक् किया और मनोविज्ञान के स्वतंत्र मनोविज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। (He was an experimentalist; but his experimentalism was the product of his philosophical views) इस प्रकार वुण्ट (Wundt) ने सन् 1879 में प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित कर मनोवैज्ञानिकों को दर्शन से हटाकर प्रयोग की ओर आकर्षित किया। इस तरह मनोविज्ञान की उत्पति दर्शनशास्त्र से मानते हुए गहरा संबंध मानते हैं।

मनोविज्ञान व सामाजिक विज्ञान (Psychology and Social Science)

यों तो सामाजिक विज्ञान के कई विषय हैं जो मनोविज्ञान से संबंधित हैं। लेकिन यहां राजनीतिशास्त्र व अर्थशास्त्र को महत्ता के अनुसार सम्मिलित किया गया है। राजनीति शास्त्र व मनोविज्ञान के अध्ययन के विषय, जैसे- नेतृत्व, नेता के गुण, योग्यता, प्रजातंत्र आदि हैं। राजनीतिशास्त्र में राजनीतिक संगठनों का अध्ययन किया जाता है। राजनीति शास्त्र का मुख्य उद्देश्य ऐसे संगठन का गठन करना होता है जो अधिक से अधिक जनता का हित कर सके। राजनीति के इस प्रकार अध्ययन व उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मनोविज्ञान एक सहायक के रूप में कार्य करता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर नेताओं का अध्ययन कर राजनीतिशास्त्र अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सकता है। इस तरह राजनीतिशास्त्र व मनोविज्ञान का गहरा संबंध है।

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाएं, जैसे- औद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psychology), विज्ञापन मनोविज्ञान (Advertisement Psychology), उपभोक्ता मनोविज्ञान (Consumer

Psychology) आदि मनोविज्ञान के नये क्षेत्र हैं जो उत्पादन से संबंधित हैं। जहां तक मनोविज्ञान एवं अर्थशास्त्र का संबंध है, अर्थशास्त्र पूर्णत: मनोविज्ञान से प्रभावित है। अर्थशास्त्र की विषय सामग्री, उत्पत्ति, उपभोग, वितरण, विनिमय, लाभ–हानि आदि का गहन अध्ययन किया जाता है। जैसा कि ऊपर बताया गया है औद्योगिक मनोविज्ञज्ञन, मनोविज्ञान की शाखा है। यह मनोविज्ञान की शाखा श्रमिाकों की सुविधाएं, उनकी समस्याएं उद्योगपति व श्रमिकों के संबंधा से संबंधित कुछ सिद्धांतों का विश्लेषण करती है जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन को प्रभावित करते हैं। एक औद्योगिक मनोविज्ञान श्रमिकों के चयन के लिए परीक्षण के अलावा एक विशेषज्ञ के शोध–कार्य बाजार तक उपभोक्ता से संबंधित समस्याओं का हल निकालने में भी सहायक होते हैं। जनता किस प्रकार विज्ञापन के आधार पर प्रभावित होती है, किस ब्रांड को लोग पसंद करते हैं आदि शोध के आधार पर औद्योगिक मनोविज्ञान अर्थशास्त्र के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को सुझाकर एक सहायक के रूप में कार्य करता है।

मनोविज्ञान व व्यावहारिक विज्ञान (Psychology and Behavioural Science)

व्यावहारिक विज्ञान के अन्तर्गत समाजशास्त्र व मानवशास्त्र को सम्मिलित किया गया है जिनका संबंध मनोविज्ञान से है। समाजशास्त्र में समाज व समाज के व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्र व मनोविज्ञान में बहुत समानता है। मनोविज्ञान की शाखा समाज मनोविज्ञान की शाखा समाज मनोविज्ञान समाजशास्त्र के संबंध को और गहरा कर देती है। दोनों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्री का विशेष संबंधा समूह से है व समाज मनोविज्ञान में समूह व समाज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति के संबंधों का अध्ययन किया जाता है। समाज मनोविज्ञान में सामाजिक मूल्यों आदि के बारे में व्यक्ति के दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाता है एवं समाजशास्त्र में इनसे संबंधित समाजिक मानक (Social Rules) व मूल्यों का अध्ययन होता है। इस प्रकार दोनों का परस्पर गहरा संबंध है।

मानवशास्त्र व मनोविज्ञान का संबंध भी कम नहीं है। मानवशास्त्र (Anthropology) मुख्य रूप से प्राचीन संस्कृति से संबंधित प्रकृति, रहन–सहन व अनेक व्यक्तियों की समूह के अध्ययन पर विशेष रुचि रखता है जबकि मनोविज्ञान में व्यक्ति के अध्ययन को महत्व दिया जाता है। दोनों ही व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करते हैं जिससे पुरानी संस्कृति से नवीन संस्कृति के परिवर्तन की जानकारी भी मिलती रहती है।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान मानव विज्ञान के अध्ययनों में एक सहायक विज्ञान है अर्थात् जातिगत विशेषताओं और सामाजिक विकास से संबंधित अध्ययन मानव विज्ञान शास्त्री मनोविज्ञान की सहायता से करते हैं, अत: एक-दूसरे से पूरक हैं।

मनोविज्ञान व दर्शनशास्त्र (Psychoilogy and Philosophy)

मनोविज्ञान का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इसकी उत्पत्ति दर्शनशास्त्र से हुई है व मनोविज्ञान की उत्पत्ति में महान् दार्शनिकों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। सभी प्राकृतिक व्यवहारवादी तथा सामाजिक विज्ञानों की उत्पति दर्शनशास्त्रियों के विचारों से हुई। मनोविज्ञान का अध्ययन पहले दर्शनशास्त्र में ही किया जाता था।

आज का आधुनिक मनोविज्ञान पहले की अपेक्षा काफी भिन्न है। मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है। भारतीय दर्शन में तत्व विवेचन में मनोवैज्ञानिक तथ्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। दर्शन में प्रमाणशास्त्र मनोविज्ञान पर आधारित होता हैं

वुण्ट (Wundt) जो दार्शनिक भी थे, उन्होंने दर्शन की चिन्तन सामग्री को व्यवस्थित करते हुए सिद्धांतों का निर्माण किया। बोरिंग के शब्दों में, प्रारंभ रूप में वह प्रयोगवादी।

इबिंगहौस (Ebbinghaus) के शब्दों में, ''मनोविज्ञान का अतीत बहुत लम्बा है परन्तु उसका इतिहास बहुत छोटा है।'' इबिंगहौस (Ebbinghaus) का यह कथन मनोविज्ञान के अनौपचारिक (informal) तथा औपचारिक (formal) इतिहास का संकेत देता है। मनोविज्ञान का अतीत इसलिए लम्बा है कि इसका जन्म उस समय हुआ होगा जबकि मनुष्य ने इस धरती पर कदम रखा होगा और एक दूसरे को समझने तथा अपने आप को समझने का प्रयास किया होगा। परन्तु औपचारिक रूप से मनोविज्ञान का इतिहास मात्र 128 वर्ष पुराना है। एक विज्ञान की हैसियत से मनोविज्ञान का जन्म 1879 में हुआ। उण्ट (Wundt) ने लिपजिंग (Leipzig) नामक स्थान पर मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला की स्थापना की और मनोविज्ञान को एक अलग विज्ञान के रूप में घोषित कर दिया। इस अर्थ में मनोविज्ञान का इतिहास सचमुच छोटा है।

मनोविज्ञान (Psychology) वास्तव में दो खंडों यानि Psyche तथा logos के शब्दिक अर्थ पर आधारित है। Psyche का अर्थ आत्मा तथा logos का अर्थ विज्ञान है। इसी आधार पर कहा गया कि मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान हैं (Psychology is the science of soul) बाद में आत्मा शब के स्थान पर मन (mind) शब्द का व्यवहार किया गया और इस तरह मनोविज्ञान को मन का विज्ञान कहा गया। (Psychology is the science of mind)

मनोविज्ञान की यह दार्शनिक परिभाषा पूर्णत: अवैज्ञानिक सिद्ध हुई परन्तु मनोविज्ञान की परिभाषा के विकास की यह पहली कड़ी है जिसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

मनोविज्ञज्ञन की उपरोक्त परिभाषा के बाद उण्ट (Wundt) ने बतलाया कि–

''मनोविज्ञान चेतन अनुभूति अथवा तात्कालिक अनुभूमि का विज्ञान है।'' (Psychology is the science of conscious experience)

परन्तु उण्ट की इस परिभाषा को भी दोषपूर्ण माना गया और यह परिभाषा भी मनोविज्ञान की सर्वोत्तम व्यवस्था करने में असमर्थ रही। इसके बाद मनोविज्ञान को वाटसन (Watson), 1878-1958) ने अपने शब्दों में परिभाषित किया और तब मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान (Psychology is the science of behavior) कहलाया।

परन्तु वाटसन की यह परिभाषा भी मनोवैज्ञानिकों का पूर्ण समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी।

अन्त में मनोवैज्ञानिकों ने उपरोक्त सभी परिभाषाओं का खंडन किया और मनोविज्ञान को निम्न प्रकार से परिभाषित किया।

लैंड्समैन (Landsman) के शब्दों में, मनोविज्ञान व्यवहार तथा अनुभूति का विज्ञान है। (Psychology is the science of behavior and experience).

इस प्रकार मनोविज्ञान की आधुनिक परिभाषा में उसे व्यवहार (behavior) तथा अनुभव (experience) दोनों के समर्थक विज्ञान (Positive science) के तौर पर परिभाषित किया गया है। अत: मनोविज्ञान की परिभाषा के रूप में यह कहा जा सकता है कि–

''मनोविज्ञान प्राणी और वातावरण सं संबंधित अनुभव तथा व्यवहार का अध्ययन करने वाला एक समर्थक विज्ञान है।'' (Psychology is a positive science of experience and behavior of the organism in relation to environment).

मनोविज्ञान की उपरोक्त परिभाषा मनोविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट करने में सक्षम है। इस परिभाषा में मनोविज्ञान को एक समर्थक विज्ञान कहा गया है। समर्थक विज्ञान से तात्पर्य है कि मनोविज्ञान में अध्ययन बिल्कुल उसी रूप में होता है जिस प्रकार व्यक्ति का व्यवहार और अनुभव होता है न कि जिस प्रकार होना चाहिए। अर्थात् मनोविज्ञान में ''होना चाहिए (Should be)'' को स्थान प्राप्त नहीं है बल्कि मनोविज्ञान केवल 'है' जैसा है (as it is) का ही अध्ययन किया जाता है।

इस प्रकार, मनोविज्ञान में व्यवहारों तथा अनुभवों का अध्ययन वातावरण से संबंधित होता है। इसका क्षेत्र मानव मस्तिष्क के विभिन्न प्रक्रियाओं से लेकर भूत–प्रेत एवं आत्मा–संबंधी उदम्य क्रियाओं का अध्ययन है। अत: मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

1.3 मनोविज्ञान के दृष्टिकोण (Perspectives of Psychology)

मनोविज्ञान के संदर्भ के अन्तर्गत विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यवहार के विभिन्न आधारों की चर्चा की जाएगी। इसके अन्तर्गत यह बताया जाएगा कि प्राणी के व्यवहार के कौन–कौन से प्रमुख आधार हैं, अर्थात व्यक्ति का व्यवहार किन–किन कारकों से प्रभावित होता है। प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को करता है– इन व्यवहारों की उत्पति कैसे होती है अथवा इनका आधार क्या है– इसकी व्यवस्था की जाएगी। वर्तमान युग में मनोवैज्ञानिक किसी वाद या स्कूल से प्रतिबंधित होकर अध्ययन या शोध नहीं करते वरन् उनका झुकाव विशिष्टीकरण के प्रति हो रहा है। सन् 1930 के बाद से मनोविज्ञान के कार्यक्षेत्र का तीव्र गति से विकास हो रहा है उससे कदम मिलाने में मनोवैज्ञानिक को किसी एक वाद या स्कूल की सीमा में सीमित रहने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आधुनिक समय में मनोवैज्ञानिकों ने व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न उपागमों (Approaches) को विकसित कर लिया है जिनमें विभिन्न विचारधाराओं का अपूर्व सामंजस्य देखने को मिलता है। इस प्रकार आधुनिक समय में मनोविज्ञान में सात मुख्य दृष्टिकोण (perspectives) प्रचलित हें जिनका उपयोग मनोवैज्ञानिक विभिन्न व्यवहारों को समझने तथा समस्याओं को हल करने में करते हैं। इस प्रकार किसी एक दृष्टिकोण तक सीमित रहना आवश्यक नहीं है वरन् जिस भी दृष्टिकोण के आधार पर सबसे उचित समाधान मिल सके उसे अपनाया जाना चाहिए। कुछ प्रमुख दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं :–

1. जैविक दृष्टिकोण (Biological perspective)
2. मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (Psychoanalytic perspective)
3. व्यवहारपरक दृष्टिकोण (Behavioural perspective)
4. संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (Cognitive perspective)
5. मानवतावादी दृष्टिकोण (Humanistic perspective)
6. विकासवादी दृष्टिकोण (Evolutionary perspective)
7. सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण (Socio-cultural perspective)

(1) जैविक दृष्टिकोण (Biological perspective) – इस संदर्भ में इस बात पर बल डाला जाता है कि प्राणी के व्यवहार का एक जैविक आधार (biological basis) होता है। जिन मनोवैज्ञानिकों द्वारा जैविक संदर्भ को अपनाकर मानव व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं की व्यवस्था की जाती है, उन्हें दैहिक या शरीर क्रिया मनोवैज्ञानिक कहा जाता है। इसमें प्राणी

के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए जैविक प्रक्रियाओं एवं आनुवंशिकता (heredity) की अहम् भूमिका पर बल डाला जाता है। यहां मनोवैज्ञानिक मस्तिष्क, सुषुम्य, न्यूसेन्स के कार्यों, न्यूरोट्रांसमीटर एवं हॉरमोन्स (hormones) के संतुलन, जीन्स एवं गुजरूल आदि का सघन अध्ययन करते हैं। जैसे विभिन्न न्यूरोट्रा से मीटर का जरूरत से ज्यादा या कम का संबंधा प्रत्यक्ष रूप से विभिन्न मनोरोगों जैसे विषाद (depression) मनोविदालिता (Schizophrenia) आदि से जोड़कर उसका अध्ययन करते हैं। इतना ही नहीं, विभिन्न तरह के औषधों का उपयोग करके मस्तिष्क में जैवरसायन संतुलन (biochemical balance) बनाकर रखने की कोशिश की जाती है ताकि उसका प्रभाव व्यक्ति पर अनुकूल पड़े।

यह दृष्टिकोण शरीर तथा शारीरिक प्रक्रियाओं को विशेष महत्व देते हुए व्यवहार को समझने का प्रयास करता है। जैविक दृष्टिकोण तंत्रिका तंत्र, विभिन्न शारीरिक प्रक्रियाओं, हॉर्मोन्स आदि की क्रिया प्रणाली की सहायता से मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की व्याख्या करने का प्रयास करता है। इस दृष्टिकोण का प्रारंभ देकार्ते, हाब्स तथा डार्विन के विचारों से हुआ था। आधुनिक समय में कार्लसन (1993) ने इसी दृष्टिकोण के आधार पर कई मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं व समस्याओं की व्याख्या करने का सफल प्रयास किया है। प्राणी के प्रत्येक व्यवहार (सोचने, खाने–पीने, हंसने–रोने, चलने–बैठने, नाचने–गाने, खेलने आदि) का आधार शरीर एवं शारीरिक प्रक्रियाएं ही हैं अत: इस दृष्टिकोण की सहायता से बिना व्यवहार की वैज्ञानिक व्याख्या करना असंभव है।

(2) मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (Psychoanalytic perspective) इस संदर्भ का विकास सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) के शोधकार्यों एक सिद्धांतों से हुआ है। इस संदर्भ में मानव व्यवहार एवं संबंधित मानसिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए अचेतन अभिप्रेरण (unconscins motivation) तथा आरंभिक बाल्यावस्था की अनुभूतियों पर पर्याप्त बल डाला जाता है। इस संदर्भ के अनुसार मानव का कोई भी व्यवहार अपने आप नहीं होत समझा जाता है। सभी आधार का निर्धारण किसी न किसी तरह के अभिप्रेरक बल से होता है। इतना ही नहीं व्यस्कावस्था में किये गए व्यवहारों का भी निर्धारण बाल्यावस्था की अनुभूतियों द्वारा होता है। इस संदर्भ के अनुसार व्यस्क व्यक्ति का नींव मनोलैंगिक विकास (Psychosexual development) के विभिन्न अवस्थओं के दौरान हो जाता है।

इस दृष्टिकोण का मुख्य बिन्दु है कि व्यवहार के कई पक्ष (Aspects) व्यक्तित्व की छिपी हुई शक्तियों से नियंत्रित होते हैं। इस दृष्टिकोण के विकास सिगमंड फ्रायड के विचारों से हुआ। इसे मनोगत्यात्मक (Psychyodnamic) दृष्टिकोण भी कहा जाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार प्रत्येक व्यवहार चाहे वह अर्थपूर्ण हो या अर्थहीन, कोई न कोई कारण अवश्य होता है। यह दृष्टिकोण चेतन व्यवहार को समझने में अचेतन या अवचेतन प्रेरणा को बहुत महत्वपूर्ण मानता है। अनेक मानसिक विकृतियों की व्याख्या मनोगत्यात्मक सिद्धांतों के आधार पर उचित रूप से की जा सकती है। स्वप्न विश्लेषण के क्षेत्र में भी इस दृष्टिकोण का विशेष योगदान है।

(3) व्यवहारपरक दृष्टिकोण (Behavioural perspective) – इस संदर्भ के अनुसार प्राणी के व्यवहार को पर्यावर्णी कारकों जैसे अधिगम (learning) अनुभूति (Experience) आदि द्वारा सुगठित (shape) किया जाता है। इस संदर्भ की मुख्य मान्यता यह है कि पर्यावर्णी कारकों द्वारा ही व्यवहार का निर्धारण होता है। अत: व्यवहार के कारणों को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इन पर्यावर्णी कारणों का विश्लेषण किया जाए। इस संदर्भ में अन्य लोगों की अन्वेषण वाटसन (Watson), स्कीन्नर (Skinner) पैवलव (Pavlav) गथरी (Guthrie), ऑलमैन (Tolman) का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है। इन मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यवहार परिमार्जन (behavior modification) द्वारा समस्यात्मा व्यवहार को बदलने का प्रयास किया जाना चाहिए। इन लोगों द्वारा प्राणी के व्यवहार का विश्लेषण उद्दीपक–प्राणी–अनुक्रिया (Stimulus – Organism – Response) के रूप में किया जाता है।

व्यवहारवादियों, जैसे वाटसन, स्किनर आदि व्यवहार की व्याख्या में केवल उद्दीपक (Stimulus) एवं प्रतिक्रिया (Response) को महत्व देते हैं। इस दृष्टिकोण में सीखने, अनुभव पर बहुत बल दिया गया है, क्योंकि इन्हें ही मापा व निरीक्षण किया जा सकता है। ऐसा करने पर ही मनोविज्ञान को विज्ञान का दर्जा दिया जा सकता है। अगर यह पूछा जाए कि व्यक्ति को कार्य करने के लिए, कौन से कारक प्रेरित करते हैं? इस दृष्टिकोण के अनुसार केवल बाह्य कारक (Overt factor), जैसे– पुरस्कार, दंड, उत्पादन, गल्तियां आदि ही महत्वपूर्ण है। आंतरिक कारकों के योगदान की व्याख्या व्यवहारपरक दृष्टिकोण से नहीं की जाती है।

परन्तु कुछ न व्यवहारवादी जैसे- टॉलमैन, स्पेन्स आदि ने प्राणी चर (Organismic Variable) के महत्व को स्वीकार किया है। इन्होंने अपने प्रयोगों के आधार पर बतलाया की बिना प्रणोद (Drive) प्राणी प्रतिक्रिया करने को प्रेरित नहीं होता है। अत: व्यवहार की व्याख्या उद्दीपक-प्राणी प्रतिक्रिया (S.O.R.) सूत्र के आधार पर उचित रूप से की जा सकती है।

(4) संज्ञानात्मक दृष्टिकोण (Cognitive perspective) - इस संदर्भ में मानसिक प्रक्रियाओं (mental processes) को काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इस संदर्भ की मुख्य मान्यता यह होती है कि मात्र उद्दीपक (stimulus) से व्यवहार की उत्पत्ति नहीं होती है बल्कि जब व्यक्ति के सामने कोई उद्दीपक आता है, तो वह उस उद्दीपक का ठीक ढंग से प्रत्यक्षण करता है, उससे संबंधित चीजों की यदि करता है, उसे एक तरह से विश्लेषित करता है, किसी निर्णय पर पहुंचता है तथा अंत में कोई अनुक्रिया करता है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यवहार का एक संतोषजनक व्याख्या करने के लिए कई तरह के संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे, प्रत्यक्षण, चिंतन, स्मृति, भाषा आदि पर ध्यान देना आवश्यक है।

व्यवहार को समझने के लिए पहले उसकी मानसिक अवस्था पर ध्यान देने पर बल देता है। व्यवहार को प्रभावित करने में मानसिक प्रक्रियाओं, जैसे- विचारण, स्मृति, प्रत्यक्षीकरण, निर्णय करने आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति जब किसी सिीति में प्रतिक्रिया करता है, तब उसमें बहुत सी मानसिक प्रक्रियायें सम्मिलित होती हैं। उदाहरणार्थ; सर्वप्रथम व्यक्ति उस स्थिति का प्रत्यक्षीकरण करता है, संगठित करता है, चिंतन करता है, निर्णय करता है तब प्रतिक्रिया करता है। यह सूचना संसाधन प्रक्रिया (Information Processing) के समान ही होती है।

संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से सभी प्रकार के मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों को समझने में मानसिक प्रक्रियाओं की ही सहायता ली जाती है। यह दृष्टिकोण हमेशा तर्कसंगत चिंतन के नियम के आधार पर ही व्यवहार की व्याख्या करता है। परन्तु कई व्यवहार, जैसे- फूंक मारने पर पलक का झपकना, आग के पास हाथ जाते ही अपने आप दूर हो जाना आदि की व्याख्या बिना किसी मानसिक प्रक्रिया या तर्कसंगत चिंतन से की जा सकती है। कई व्यवहारों का आधार जैविक होता है।

संज्ञानात्मक दृष्टिकोण उच्च स्तरीय व्यवहार की व्याख्या करने के लिए उचित रहता है।

(5) मानवतावादी दृष्टिकोण (Humanistic perspective) – इस संदर्भ की उत्पति का श्रेय मैसलो (Maslow) तथा रोजर्स (Rogers) को कहा जाता है। इस संदर्भ में मनुष्यों की अपूर्वता (unisqueness) तथा उनके वर्द्धन, चयन एवं मनोवैज्ञानिक स्वस्थ्य (psychological health) पर डाला जाता है। इस संदर्भ में मनोवैश्लेषिक संदर्भ के उस विचारधारा को पूर्णत: अस्वीकृत कर दिया जाता है कि व्यक्ति का व्यवहार अपने आंतरिक द्वंद्व (internal conflict) से निदेशित होता है और वह अचेतन अभिप्रेरण द्वारा पूर्णत: निर्धारित होता है। इस संदर्भ में इस बात पर मूलत: बल डाला जाता है कि मनुष्य की प्रकृति मूलत: चेतन एवं सृजनात्मक (creative) होता है तथा उसमें अपने आप को उन्नत बनाने की इच्छा होती है। अगर व्यक्ति अपनी कोशिश अपने पसंद के क्षेत्र में लगाता है तो वह निश्चितत रूप से एक सृजनात्मक जिन्दगी (Creative life) व्यतीत कर सकता है तथा उसमें आत्म सिद्धि (self actualization) का स्तर आ सकता है।

मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास व्यवहारपरक, मनोगत्यात्मक दृष्टिकोणों के विरोध स्वरूप हुआ। ये दोनों ही दृष्टिकोण मनुष्य के मूल स्वभाव चेतनता, स्वतंत्रता, सृजनात्मकता की अनदेखी करते हैं। व्यक्ति का व्यवहारपूर्ण रूप से बाह्य एवं आंतरिक कारकों पर ही निर्भर है उसकी स्वयं की कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है। जबकि मानवतावादी दृष्टिकोण मनुष्य की स्वतंत्रता, चेतनता तथा सृजनात्मकता का आदर करता है। मनुष्य में स्वयं को उन्नत (Growth) करने की जन्मजात प्रवृति होती है। इस दृष्टिकोण का मुख्य प्रवर्तक अब्राहम मेस्लो (Abraham Maslow) तथा कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) है। इन लोगों ने आत्म सिद्धि (Self Actualization) का प्रत्यय दिया। आत्म प्रत्यय (Self Concept) को प्रमुख मानकर स्व–उन्नति को एक सतत जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया माना। आधुनिक काल में मानवतावादी दृष्टिकोण बहुत प्रचलित है।

यह दृष्टिकोण बहुत लुभावना लगता है परन्तु इसकी कठिनाई यह है कि इसका वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं हो पाया है। यह बहुत आशावादी दृष्टिकोण है इसमें मानव के नकारात्मक पहलुओं की उपेक्षा की गई है। प्रेरणा की दृष्टि से यह दृष्टिकोण एक अलग परिप्रेक्ष्य से मानव को प्रस्तुत करता है।

(6) **विकासवादी संदर्भ** (Evolutionary perspective) – इस संदर्भ का मुख्य दोष यह है कि मानव क्षमताएं चाहे मानसिक हो या दैहिक, दोनों ही हजारों साल से गुजरकर आज

व्यक्ति के अनुकूली उद्देश्यों का पूरा करने के लायक बन पायी है। उस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिकों द्वारा मूलत: यह अध्यय किया जाता है कि मनुष्यों की जन्मजात प्रवृत्तियाँ एवं गुण व्यवहारों को किस तरह से प्रभावित करती है। ऐसे मनोवैज्ञानिकों का मत है कि व्यक्ति का जीन्स अकेले व्यक्ति का तकदीर का निर्धारण नहीं करता है। ऐसी प्रवृत्तियाँ पर्यावरण दवाबों (environmental pressures) के कारण परिवर्तित होती हैं और व्यक्ति के विभिन्न तरह के व्यवहार को निर्धारित करती है।

विकासवादी दृष्टिकोण व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या उसके पर्यावरणीय दबावों के साथ उसका अनुकूलन की क्षमता के संदर्भ में करता है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ जन्मजात प्रवृत्तियों के साथ पैदा होता है तथा उसे भिन्न-भिन्न प्रकार का वातावरण मिलता है, उसमें वह कैसे स्वयं का पूर्ण विकास करते है। इस प्रक्रिया के संदर्भ में प्रक्रिया व्यवहारों की व्याख्या इस दृष्टिकोण के अनुसार की जाती है। निसबेट्ट (1990) में पर्यावरणीय मनोविज्ञान नामक एक शाखा का विकास किया, जिसमें विकास के दौरान अनुकूलन करने में किन-किन पर्यावरणीय दबावों का सामना करने में किन प्रतिक्रियाओं का सहारा लिया, इसके अध्ययन किया जाता है। इसी शाखा में इस दृष्टिकोण का विकास हुआ।

इस प्रकार मनोविज्ञान में व्यवहार को समझने, उसकी व्याख्या करने के लिये विभिन्न दृष्टिकोणों की सहायता ली जाती है।

(7) **सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ** (Socio-cultural perspective) – इस संदर्भ में प्राणी के व्यवहार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन किया जाता है और किसी व्यक्ति के व्यवहार को समझने में इन प्रभावों की मदद ली जाती है। प्राय: देखा गया है कि किसी अन्य संस्कृति में पले-बढ़े व्यक्तियों के व्यवहारों को हम ठीक ढंग से नहीं समझ पाते हैं। ऐसी परिस्थिति में सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ हमे व्यवहार को समझने के लिए एक उत्तम फ्रेमवर्क प्रदान करता है। इस तरह से इस संदर्भ का मुख्य आशय यह है कि प्राणी के व्यवहार को समझने के लिए हमें संबंधित सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों को भी समझना होगा।

यह दृष्टिकोण मानवीय व्यवहार का अध्ययन सामाजिक सांस्कृतिक प्रभावों के संन्दर्भ में करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, समाज से अलग करके उसके व्यवहार की व्याख्या नही की जा सकती है।

व्यक्ति के व्यवहार पर उसके समाज एवं संस्कृति का बहुत प्रभाव पड़ता है अत: इसी सन्दर्भ में उसके व्यवहार की उचित व्याख्या की जा सकती है। व्यक्ति के हावभाव, प्रत्यक्षीकरण, विचार, क्रियाकलाप आदि उसके समाज के नियम-कायदों से प्रभावित होते हैं अत: उन्हें जाने, समझे बिना उसके व्यवहार को पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है जैसे एक सोलह वर्षीय बालक माता-पिता को छोड़कर अलग रहने लगता है, अंशकालिक (part-time) नौकरी करता है तथा साथ में अपनी पढ़ाई भी करता है इस प्रकार की व्याख्या भारत व अमेरिका में एक समान नहीं की जा सकती है। यहां यह व्यवहार बड़ा असामान्य माना जायेगा जबकि अमेरिका में यह एक सामान्य व्यवहार है।

स्पष्ट हुआ कि मनोविज्ञान में कई तरह के संदर्भ हैं। जो मानव व्यवहारों की व्यवस्था अपने-अपने दृष्टिकोण से करने का एक सामान्य फ्रेमवर्क प्रस्तुत करता है।

1.4 सारांश (Summing-up)

प्रस्तुत पाठ में मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय और मनोविज्ञान के संदर्भों की विस्तृत व्याख्या की गई है।

अध्याय के पहले भाग में मनोविज्ञान के संम्प्रत्यय तथा इसके स्वरूप को भली-भांति समझाने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में मनोविज्ञान के इतिहास का वर्णन करते हुए इसकी परिभाषा का वर्णन किया गया है। विभिन्न परिभाषाओं के आलोक में मनोविज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मनोविज्ञान के स्वरूप की विस्तृत चर्चा के बाद मनोविज्ञान के विभिन्न संदर्भों (perspective) की चर्चा अध्याय के दूसरे भाग के रूप में की गई है। इसके अन्तर्गत जैविक सन्दर्भ (biological perspective), मनोवैश्लेषिक संदर्भ (psychloanalytic perspective), व्यवहार परक संदर्भ (behavioural perspective), संज्ञानात्मक संदर्भ (cognitive perspective), मानवतावादी संदर्भ

(humanistic perspective), विकासवादी संदर्भ (developmental perspective) तथा सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ (Socio-cultural perspective) की विस्तृत विवेचना की गई है।

इस प्रकार मनोविज्ञान के विभिन्न संदर्भों की चर्चा के फलस्वरूप पाठकगण व्यक्ति के व्यवहारों के विभिन्न आधारों अथवा दृष्टिकोणों को भली–भांति समझ पाऐंगे।

अतः प्रस्तुत अध्याय मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय तथा इसके विभिन्न संदर्भों की व्याख्या कर पाठकों को संम्बंधित ज्ञानार्जन में पूर्णतः सहयोगी सिद्ध होगा।

1.5 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

1. मनोविज्ञान क्या है? इसकी परिभाषा दें तथा इसके स्वरूप की व्याख्या करें।
   What is psychology? Define it and explain its nature.
2. मनोविज्ञान के विभिन्न संदर्भों की व्याख्या करें।
   Explain the different perspectives of psychology.
3. मनोविज्ञान के प्रमुख संदर्भों की व्याख्या करें।
   Describe psychology and explain the main perspectives of psychology.